

#### असाधारण

## EXTRAORDINARY

भाग П—सण्ड 3—उपस्पद (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

# PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 542]

नई विल्ली, बृहस्पतिबार, विसम्बर 22, 1977/पौष 1, 1899

No. 542]

NEW DELHI, THURSDAY, FECEMBER 22, 1977/PAUSA 1, 1899

इस भाग में भिन्न एष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सकी।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

#### MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Industrial Development)

#### ORDER

New Delhi, the 22nd December 1977

80 849(E)/18FB/IDRA/77 - Whereas by the Order of the Government of India in the Ministry of Industry (Department of Industrial Development) No SO 826(E)/18FB/IDRA/76 dated the 23rd December, 1976 (hereinafter referred to as the said Order) the Central Government in exercise of the powers conferred by clause (b) of sub-section (1) of section 18FB of the Industries (Development and Regulation) Act. 1951 (65 of 1951) declared that the operations of all or any of the contracts assurances of property agreements, settlements, awards standing orders or other instruments in force immediately before the date of issue of the said Order fother than the liabilities to the State Bank of India to the extent of the amount outstanding on the clean cash credit limit guaranteed by the Government of Maharashira and the amounts drawn by the mill against the cosh credit account (ordinary) to the extent these are covered in the current assets! to which the industrial undertaking known as Messrs Pulgaon Cotton Mills Limited. Pulgaon is a party or which may be applicable to the said industrial undertaking shall remain suspended for a period of one year from such date and that all the rights, privileges obligations and liabilities accruing or arising thereunder before the said date shall remain suspended for the said period.

And whereas the Central Government is satisfied that the duration of the said Order should be extended for a further period of one year,

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with sub-section (2), of section 18FB of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), the Central Government hereby extends the duration of the said Order for a further period upto and inclusive of the 22nd December, 1978

[No F.3/17/75-CUC]

G V. RAMAKRISHNA, Addl. Secy

## उद्योग मंत्रालय

# (ग्रौद्योगिक विकास विभाग)

### श्रादेश

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 1977

का० का० 849 (क्र)/18 चल क्री क्री ज्ञार ० ए०/77 — भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय (क्री द्योगिक विकास विभाग) के ब्रादेश संख्या का० ब्रा० 826 (क्र)/18 चल विश्वा क्री क्री क्रार ० ए०/76, तारीख 23 दिसम्बर, 1976 (जिसे इसमे इसके पश्चात् उक्त ब्रादेश कहा गया है) हारा केन्द्रीय सरकार ने, उद्योग (विकास और विनियमन) श्रिधिनियम 1951 (1951 का 65) की धारा 18 नख की उपधारा (1) के खण्ड (ख) हारा प्रदत्त शक्तियो का प्रयोग करने हुए घोषणा की थी कि उक्त ब्रादेश के जारी होने की तारीख में ठीक पूर्व प्रवृत्त सभी सविदाओ, सम्पत्ति के हरतातरण पत्नो, करारो, व्यावस्थापनो, पचाटो, स्थायी ब्रादेशों या श्रन्य लिखितों का (जो उन दायित्वों से, जो भारतीय स्टेट बैंक को उतनी रकम तक के दायित्वों से भिन्त है, जितनी रकम महाराष्ट्र सरकार हारा प्रत्याभूत स्पष्ट नकद-उधार मीमा (वलीन केश क्रेडिट लिमिट) पर बकाया है, श्रीर जो नगद उधार खाते (साधारण) किश क्रेडिट एकाउन्ट (ब्राडिनरी)] में से मिल हारा, उम सीमा तक जिस सीमा तक वे चालू ब्रान्तियों के ब्रन्तर्गत ब्राती है, निकाली गई धनराशि से भिन्त है), जिनका कि मैसर्स पुलगांव काटन मिल्म लिमिटेड, पुलगांव नामक श्रीद्योगिक उपक्रम एक पक्षाकार है या जो उक्त श्रीद्योगिक उपक्रम को लागू हो, प्रवर्तन उम तारीख से एक वर्ष की श्रवधि के लिए निलम्बित रहेगा श्रीर उक्त तारीख से पूर्व तद्धीन प्रोद्भृत या उद्भृत होने वाले सभी श्रीधकार विशेषाधिकार, बाध्यताएं श्रीर दायत्व उक्त श्रवधि के लिए निलम्बित रहेगे,

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त श्रादेण की श्रस्तित्वावधि एक वर्ष की श्रविध के लिए श्रीर बढा दी जानी चाहिए ,

श्रवः, श्रवं, केन्द्रीय सरकार, उद्योग (विकास श्रांर विनियमन) श्रिधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18चल की उपधारा (2) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदक्त शिवितयों का प्रयोग करते हुए, उक्त श्रादेश की श्रस्तित्वाविध 22 दिसम्बर, 1978 तक, जिसमें यह दिन भी सम्मिलित है, कि श्रीर श्रविध के लिए बढ़ाती है।

[म॰ फा॰ 3/17/75-सी॰यू॰सी॰] जी॰ वी॰ रामकृष्णा, श्रपर सचिव।

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मृद्राणालय, मिन्टो गोड, नई दिल्ली द्वारा मृद्रित तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977

PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, MINTO ROAD, NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1977